42

आत्महत्या के विरुद्ध काव्य में सामाजिक दूरावस्था

प्रा.डॉ.महादेव चिंतामणी खोत
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
श्रीकृष्ण महाविद्यालय गुंजोटी ता.उमरगा, जि.उस्मानाबाद

कवि समाज में रहकर बडा होता है।कवि का साहित्य समाज का आइना होता है। इसलिए समाज की परंपरा, रुढि, रीतिरिवाज, सभ्यता का चित्रण साहित्य में अनिवार्य रुप में आता है। कवि रघुवीर सहाय एक समाजवादी होने के नाते समाज का निरिक्षण करके लिखने का काम करता है। रघुवीर सहाय ने अलग अलग काव्य संग्रह के अंतर्गत सामाजिकता का चित्रण किया है।

व्यक्ति, समाज, देश, संसार के साथ आदमी जीवनयापन करता है। समाज में घटित हो रहा उसके बारे में अपने विचार प्रस्तुत करता है अच्छा घटित हो रहा है, तो उसकी प्रशंसा करता है और बूरा घटित हो रहा है, तो उसकी आलोचना करता है उसपर व्यंग कसता है। व्यंग कसकर समाज को उस कृती की, परंपरा को तोडने की चेतावनी देता है।

रघुवीर सहाय आत्महत्या के विरुद्ध कविता संग्रह की 'स्वाधीन व्यक्ति' कविता में समाज के प्रति जो आक्रोश है। उसे स्पष्ट करता है। एक आदमी कितना भी चाहे समाज देश में परिवर्तन होना चाहिए लेकिन परिवर्तन नहीं हो पाता। वह अपनी कविता के माध्यम से लोगों को समझाना चाहता है, लेकिन लोग समझते नही। जिसके कारण खुदको मिटाने की भावना व्यक्त करता है।कविता लिखने से पहले हँसता है, फिर निराश हो जाता है। कवि कहता है मेहनत करनी चाहिए उसका परिणाम नहीं देखना चाहिए।कवि जनता पर इस कविता के माध्यम से आक्रोश स्पष्ट करता है। उस जनता पर बार-बार क्रोधित होता है। क्योंकि इसमें जनता ढोंग का पर्दा ओढ लेती है। मेरी कविता अकविता हो जायेगी। रघुवीर सहाय अपनी स्वाधीन व्यक्ति में कहते है कि,-

हो सकता है कि, लोग-लोग मार तमाम लोग
जिनसे मुझे नफरत है मिल जाएँ, अहंकारी
शासन को बदलने के बदले अपनें को
बदलने लगें और मेरी कविता की नकलें
अकविता जाएँ बनिया रहे
बाम्हण बाम्हण और कायथ कायथ रहे पर जब कविता लिखे
तो आधुनिक
हो जाए खीसें बा दे जब कही तब गा दे्।

रघुवीर सहाय आत्महत्या के विरुद्ध कविता संग्रह की लाखें का दर्द कविता में स्पष्ट करना चाहते है कि लाखों आदमी दुनिया में रहते है लेकिन मेरे इस दर्द से वे अनजान रहते है। मेदा दर्द हिंदी की सैकडों कविताओं में प्रस्तुत किया है लेकिन उसको कोई पहचानता नहीं है।ये सभी लाखों आदमीयों का दर्द मै जानता हूँ और उसे कविता में स्वरबद्ध करता हूँ। लाखो लोग अपने दर्द के बारे में अनजान है। रघुवीर सहाय लाखो का दर्द में लिखते है,-

लखूखा आदमी दुनिया में रहते है
मेरे उस दर्द से अनजान,मुझे रहता है हिंदी में दर्द की सैकड़ों
कविताओं के बावजूद
और लाखो आदमियो का जो दर्द मैं जानता हूँ
उससे अनजान
लखका आदमी दुनिया में रहे जाता हैं।

आदमी दुनिया में रहे जाता है। रघुवीर सहाय एक हिंदी भाषिक होने के नाते हिंदी के बारे में उन्हें काफी हमदर्दी है जो आम लोगों को अपनी भाषा के प्रति होती है। आज़ादी के बाद हिंदी को राष्ट्रभाषा बना दिया गया लेकिन राजभाषा के रुप में कारोबार की भाषा के अनुरुप सही स्थान नही दिया। आजादी के बाद अघोषित समझोते कर दिए। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रुप में प्रचारित तो किया जाएगा लेकिन उसे कभी इस योग्य नहीं बनने दिया जाएगा कि वह वास्तव में राष्ट्र भाषा बन सके। जबतक हिंदी विकसीत नही होगी तब तक अंग्रेजी राजभाषा (कारोबार) भी भाषा बनी रहेगी। यह कारोबार की भाषा सरकारी सलाहकार और अधिकारी जनता के इस्तेमाल की भाषा भी रहेगी।

रघुवीर सहायजी ने व्यंग करते हुए कहा है कि हमारी हिंदी एक दुहाजू की नई बीवी है और वह बहुत बोलने वाली और बहुत सोनेवाली है। नई बीवी को गहने चढाने जाओं वह रुठती जायेगी अपने घर का माल मैके को पहुँचाती जायेगी।

रघुवीर सहाय ने हिंदी की विंडबनापूर्ण स्थिति को प्रस्तुत किया है। रघुवीर सहाय अपने शब्दों में कहते है

हमारी हिंदी एक दुहाजू की नयी बीबी है
बहुत बोलनेवाली बहुत खानेवाली बहुत सोनेवाली
गहने गढाते जाओ
सर पर चढ़ाते जाओं
वह मुटाती जाए
पसीन से गन्धाती जाए घर का माल मैके पहुँचाती जाए
पडोसिनो से जले
कचना फेंकने को लेकर लड़े।

कवि हमारी हिंदी भाषा को सही सम्मान न मिलने से कुढतें है। हमारे देश में विदेशी भाषा राष्ट्रभाषा बने और अपनी भाषा दुय्यम बने यह सही नहीं लगता है।

इस संदर्भ में सुरेश शर्मा हमारी हिंदी कविता के बारे में कहते है कि, आज हिंदी को महज अनुवाद की भाषा बनाकर उसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने का दावा करनेवाले हिंदी सलाहकार, सरकारी संस्थानो के मुर्ख हिंदी अधिकारी तथा जड़ हिंदी अध्यापक हिंदी भाषा को अपने जीवनयापन तथा सुख सुविधा का उपकरण बनाते हुए अंततः शासक वर्ग के हितो को पुष्ट कर रहे है, तथा भाषा में विकास के बदले सडन पैदा कर रहे है। रघुवीर सहाय ने हिंदी की इस विंडबनापूर्ण अरचनात्मक स्थिति को छठे दशक के उत्तरार्ध में लिखी इस कविता में बहुत पहले महसूस कर लिया था। तब तक हिंदी के लिए आंदोलन चलानेवाले राजनैतिक दलो ने इसे महसूस नहीं किया था। बाद में रघुवीर सहाय ने हिंदी का अर्थ हिंदी प्रेमियों से दो शब्द तथा भाषा की पूजा बंद करो आदि टिप्पणियो, लेखों में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रुप में विकसित न होने देने के षडयंत्र का जमकर पर्दाफाश किया है।

रघुवीर सहाय आत्महत्या के विरुद्ध काव्य संग्रह की 'कोई एक और मतदाता' कविता के माध्यम से सामान्य आदमी की जीवन दशा का वर्णन करते है। भारत देश में जो मेहनत करनेवाला वर्ग है। हम हरदम के लिए मेहनत करता रहता है। जब काम पूरा होता है तब शाम होती है। जब तक काम पूरा नहीं होता तब तक घर की तरफ नहीं चल पाता है। मेहनत से रुपये मिलते है उसी से घर का सामान, भोजन का सामान खरीद लेता है, और घर के सभी लोग भोजन करते है। तब आराम करते है। इसी तरह का मतदार की दिन चर्या चलती है। दिन रात दुःख बहलाने के लिए खुशनसीब खुशीराम रेडिओ सुनता है। ताकि अन्याय सहन करने के लिए मन तैयार रहता है। रघुवीर सहाय कोई एक और मतदाता कविता में अपने शब्दों में लिखते है-

जब शाम होती है तब खत्म होता है मेरा काम
जब काम खत्म होता है तब शाम खत्म होती है।
रात तक दम तोड देता है परिवार
मेरा नहीं एक और मतदाता का संसार
रोज कम खाते खाते ऊबकर
प्रेमी- प्रेमिका एक पत्र लिख दे गए सूचना विभाग को
दिन राज साँस लेता है ट्रांजिस्टर लिए हुए खुशनसीब खुशीराम
फुरसत में अन्याय सहने में मस्त।

एक मतदाता दिनभर काम करके रोजगार मिलते ही घर की आवश्यक चीजें खरिदता है। घर की चीजों से परिवार के लोगों का पेट भरता है। भोजन के उपरांत मतदाता का काम पूरा होता है। इस संदर्भ में शोभा राणे इस कोई एक और मतदाता कविता के बारे में कहती है कि, आज चुनाव सत्ता के साथ चुनावी दाँव पेंच जरुरी हो गये है। ऐसी स्थिती में साधारण व्यक्ति अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर पाता है। जनता निराश हो चुकी है। कोई एक और मतदाता कविता में कवि मतदाता की निरर्थकता को दर्शाते है।

रघुवीर सहाय आत्महत्या के विरुद्ध काव्यसंग्रह की 'एक अधेड' भारतीय आत्मा कविता में समाज में आज़ादी के बारे में सपने और वह अपने पुरे न होने के कारण आयी निराशा व्यक्त की है। एक दिन आदमी को लगता है कि उम्र हो गयी है। बाल सफेद और आठ-दस अधूरे स्वप्न रहते है। महामंत्री जनवादी वादों की घोषणा जनता के लिए नही करता बल्कि विरोधियों को प्रमाण देते है। कवि गंगातट पर चंदन घिसनेवाला उपराष्ट्रकवि लोहिया के यहाँ आना-जाना करता है। चापलूसी करके हो सकता है आगे राष्ट्रकवि और महामंत्री भी बनेगा। बीस बरस बीत गए लेकिन लोगों ने आजादी के बारे में जो सपने देखे थे वे पूरे नहीं हुए है। कवि कहना चाहता है की अब कोई लेखक महान नहीं बन सकता क्योंकि आज हर एक अपनी जाती को देख रहा है। लेखक महान होगा, पहले बाम्हण होंगे, उसके बाद ठाकुर होंगे। जब चमारों की बारी आयेगी तब तक कायस्थ चमार बन जायेगे। स्वार्थ प्राप्त करने के लिए कोइ आदमी किसी भी जाती को स्वीकार करने के लिए तैयार हो चुका है यह कवि स्पष्ट करता है। रघुवीर सहाय एक अधेड भारतीय आत्मा कविता में अपने शब्दों में लिखते

है-

बीस बरस बीत गए
लालसा मनुष्य की तिलतिल कर मट गई
अब नहीं हो सकता कोई लेखक महान
पहले तो बाम्हन होगे फिर ठाकुर होंगे
फिर बारी आयेगी चमारो की
तब तक चमार कायथ-न बन गए होगे।

आजादी के बाद लोग स्वहित के लिए जाति बदलने को राजी है। इतना समाज में परिवर्तन आया है। सरकारी परियोजनाओं का लाभ लेने की होड सी लगी है। इस संदर्भ में डॉ. अनंत कीर्ति तिवारी एक अधेंड भारतीय आत्मा कविता के बारे में लिखते है कि, - आजादी के बाद ठोस उपलब्धि के नाम पर केवल आजादी शब्द ही मिला। जिसे राष्ट्रीय ध्वज के थके हुए रंगो में ही देखा जा सकता है। सन १९६२ में चीन का आक्रमण राजनीतिक अव्यवस्था, भ्रष्टचारी नेताओं व्दारा दिये गये झुठे आश्वासन उत्तरोत्तर बढती हुई मँहगाई, बेरोजगारी, भूखमरी, जातिवाद और भ्रष्ट प्रशासक आदि ऐसे अनेक तत्व थे। जिनसे जनता का मोहभंग हुआ। रघुवीर सहाय का राजनीतिक तेवर की कविताओं से संपन्न काव्य संग्रह आत्महत्या के विरुद्ध १९६७ में प्रकाशित हुआ जब तक आजादी के बीस वर्ष बीत चुके थे, और जनता के सारे सजीले स्वप्न मिट्टी में मिल गये थे। सन १९६० के आसपास रघुवीर सहाय की कविता यथार्थ की जिस नयी दुनिया को उद्घाटीत करती है, वह अचानक नहीं है। १९४७ के सत्ता हस्तांतरण के बाद के वर्षो में जटिल होता हुआ सामाजिक यथार्थ १९६० तक आते-आते उस बिंदु पर पहुँच गया जहाँ से एक तीव्र मोहभंग का सिलसिला शुरु होता है।

रघुवीर सहायजी ने आत्महत्या के विरुद्ध कविता संग्रह की गिरीश की मृत्यु कविता में समाज में बुढों की स्थिति को दर्शाया है। भारतीय परिवार पद्धति में बुढे माता-पिता की परवरिश बेटों ने करनी चाहिए। बुढों की स्थिति समाज में किस तरह की है यह स्पष्ट करने की कोशिश की है। बुढे पिताजी घुटनों के बल पर गर्दन नीची करके झुककर दवाखाने में बैठे है। दवाखाने में किसी ना किसी का इंतजार कर रहा है। सिर केउपर कोई पहना नही ऐसी अवस्था में बेटे की अथवा डॉक्टर का इंतजार कर रहे है। दुनिया में सभी कों बुढ़ा होना पढता है। इस बुढ़ापे का वर्णन कवि इस प्रकार करते है, -

झुका हुआ बैठा रहा घुटने पर
बाप देर तक दवाखाने में था सुकून
देर तक घुट-घुटकर क्या तोडूँ क्या तोडूँ
नंगा सर नीचा किये तरबतर इंतजार
बुडढा करता रहा।

रघुवीर सहायजी ने आत्महत्या के विरुद्ध कविता संग्रह की आत्महत्या के विरुद्ध कविता में सकल सामाजिकता का चित्रण किया है। हर एक आदमी कहता है कि समय आ गया है परिवर्तन का। लेकिन कृती कोई नहीं करता।

डॉ. अनंत कीर्ति तिवारी आत्महत्या के विरुद्ध काव्य संग्रह के बारे में कहते है कि, - आत्महत्या के विरुद्ध काव्य संग्रह में स्त्री प्रेम प्रकृति से संबंधित कुछ कविताएँ है लेकिन इसका मुख्य विषय यह नहीं है। इस संग्रह में मुख्य रुप से रघुवीर सहाय ने भारतीय लोकतंत्र का पतनोन्मुख रुप इस भ्रष्ट राजनीति में सामान्य जन का कराहता, निहीह असहाय रुप सत्ताधारी नेताओं का दुहरा चरित्र उनकी स्वार्थपरता, पदलोलुपता, संसद के भीतर का हास्यास्पद चित्र तथा पूरी तरह से अपने समय के समाज का शब्दचित्र उपस्थित किया है। इस संग्रह में कवि ने भारतीय राजनीति के विघटनशील मूल्यों एवं तत्वों के प्रति घोर निराशा और गहरा असंतोष प्रकट किया है।

आज़ादी के बाद भारतीय राजनीति और समाज किस तरह विफलता ग्रस्त था। उस समाज को राजसत्ता की ओर से परिवर्तन होने की कतई संभवना नहीं है। इस संदर्भ में, डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी आत्महत्या के विरुद्ध काव्य संग्रह के बारे में कहते है कि, - काव्य संग्रह को पढकर लगता है कि, पुरी संसद, जो जनतंत्र की प्रतिनिधि है बैठी हुइ है। नेहरु है, मोरारजी है और लोहिया भी (मेरा प्रतिनिधी) और मैकू, और रामलाल तक हर स्तर पर देश की जनता का चित्रित करने का साहसिक कार्य है यह।

रघुवीर सहाय ने आत्महत्या के विरुद्ध काव्यसंग्रह में समाज और राजनीति का सीधा यथार्थ प्रस्तुत कर राजनेता की समाज सुधार के विषयक उदासीनता स्पष्ट की है।

नेमिचन्द्र जैन आत्महत्या के विरुद्ध में कहते है कि, - आत्महत्या के विरुद्ध की कविताओं का परिवेश कोई अमूर्त काल्पनिक परिवेश नहीं बल्कि तरह-तरह के जीत जागते लोगों से भरा हुआ है! हिंदी के शायद ही किसी कवि ने कविता में लोगों को उनके नाम से लेकर उनकी आत्मा को उजागर करनेवाले इतने विशेषणों से याद किया हो। रघुवीर सहाय की कविता का यह संसार इतना जीवंत और ऐसे लोगों से भरा है, जो हर जगह हर समय मिल जाते है, दिखायी पड़ते रहते है। पर फिर भी वे इन कविताओं में एक नया जीवन का ही अर्थ पाते है। परिचित अपरिचित के बीच यह संयोजन, एक अनोखा संबंध इस संसार को न तो झूठा पडने देता है, न पूराना या घिसा-पिटा। यह एक साथ ही कवि की प्रामाणिकता और उसके रचना-कौशल का सूचक है।

सहायजी ने प्रजातंत्र में समाज का विकास और आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से खिज प्रकट की है। खीज

कर राजनेताओं के प्रति आक्रोश प्रकट करते है। इस संदर्भ में अशोक वाजपेयी आत्महत्या के विरुद्ध काव्यसंग्रह के विषय में लिखते है कि, - वह ऐसे युवा कवि रचनाकार है जो अपने इस खास प्रजातंत्र के खास मोडपर अपनी आँखे खोले पूरे साहस से अपनी कविता में हमारी दुनिया को देखे रहा है, छट पटा रहा है चीख रहा है।

रघुवीर सहाय आत्महत्या के विरुद्ध काव्य संग्रह की आत्महत्या के विरुद्ध कविता में सामान्य आदमी की स्थिती का वर्णन किया है। आजादी के बाद भी सामान्य आदमी की स्थिति का वर्णन किया है। आजादी के बाद भी सामान्य आदमी की आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हो पाया है है। सामान्य आदमियों का जीवनयापन करते हुए वह हर समय निराश रहता है। नाटक में अभिनय करनेवाला पात्र जैसी अपनी भूमिका निभाने का काम करता है वैसा ही सामान्य आदमी अपनी जीवनी में निराशाग्रस्त रहता है। पसीने से तरबतर सामान्य आदमी की पीठ मटमैली होती है। जिसके कारण उस पर हाथ भी नहीं रख सकता है। सामान्य आदमी के हितों को देखने के लिए आज के सत्ताधीशों को कोई समय नहीं मिलता है। कवि रघुवीर सहाय अपनी आत्महत्या के विरुद्ध कविता में अपने शब्दों में लिखते है, -

कल मैने उसे देखा लाल चेहरों में एक वह चेहरा
कुढता हुआ और उलझा हुआ वह उदास कितना बोदा
वही था नाटक का ु मुख्य पात्र
पर उसकी उस पीठ पर मैं हाथ रख न सका
वह बहुत चिकनी थी ।

आत्महत्या के विरुद्ध काव्यसंग्रह में सामान्य आदमी की दूरावस्था का चित्रण किया है। कितनी भी समस्याओं से सामना करना पडा तो भी जीवन जीना छोडने का नही है। सामान्य रुप में आत्महत्या के विरुद्ध की कविता में सामाजिक दुरावस्था बतायी गयी है।

संदर्भ :-

१. रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्य भाषा डॉ अनंत कीर्ति तिवारी

२. रघुवीर सहाय रचनाओं के बहाने एक स्मरण - मनोहर शाम जोशी

३. रघुवीर सहाय का कवी कर्म- सुरेश शर्मा

४. रघुवीर सहाय की काव्य संवेदना और शिल्प- डॉ. कुसुम नेहरा

५. रघुवीर सहाय और श्रीकांत वर्मा की कविता- अमिय कुमार साहू

43

मातंग समाजाचे सामाजिक चळवळीतील योगदान

कत्तेवार लखन दिगांबर
संशोधक विद्यार्थी,
स्वा.रा.ती.म. विद्यापीठ नांदेड

प्रस्तावना:

भारत हा बहुभाषिक देश आहे. भारतात विवीध जातीचे वर्चस्व आजही २१ व्या शतकात आपणास कायम पहायला मिळते. भारतीय समाजाला सुमारे ५००० वर्षाचा प्राचिन इतिहास आहे. भारतीय जातीची निर्मीती केव्हा झाली हे मात्र निश्चित सांगता येत नाही .

महाभारत काळात विचार केला तर महाभारताच्या वेळी जाती व्यवस्था अत्यंत किचकट व गुंतागुंतीची बनली होती. त्याकाळी व्यक्तीचा दर्जा त्यांच्या जन्मावरून ठरवला जात असे प्राचिन काळातील स्वतंत्र पंचायत व्यवस्था होती. भारतीय वर्णव्यवस्थेत मध्ये शुद्र या जातीमध्ये माणूस अत्यंत हलाखीचे आणि पशुवत जीवन जगत होता. हजारो वर्षापासून मातंग समाज हिंदु धर्माच्या रूढी परंपरंने चालत आलेला असाच एक समाज आहे.

भारतीय संस्कृतीमध्ये मातंग समाजाला अनन्य साधारण महत्व आहे. पूर्वीच्या इतिहासावरून मातंग जात एक शुर, धाडसी, पराक्रमी, व राज्यकर्ती जात होती व त्यांनी राज्य वैभव भोगले होते. हिंदु धर्माच्या संस्कृतीमध्ये एखाद्या मंगलकार्याची सुरूवात करण्यासाठी मातंग व्यक्ती असावी अशी हिंदू धर्म संस्कृती सांगते. शेती साठी लागणारी आवश्यक वस्तु मातंग व्यक्ती तयार करून देत असत. बैलाला बांधण्यासाठी दोरी, गोफण, नाडे, दोरखंड, मोट हाकण्यासाठी दोरी, झाडु बनविणे, मंगल प्रसंगी वाद्य वाजविणे, गावात दंवडी देणे इत्यादी कामे हे मातंग समाजाच्या वाटयाला आली होती. पूर्वीच्या काळी मातंग समाजाला लक्ष्मी मानत.प्राचिन काळात सर्वच वस्तू मानव निर्मीत असल्यामूळे समाजातील सर्व स्त्री- पूरूषांना रोजगार मिळत असे. त्यामूळे प्रत्येक समाज हा त्या काळात अतिशय महत्वाचा होता. त्यांची भूमिका ही न्यायाची होती.

महाराष्ट्रात मातंग जातीची लोकसंख्येचे प्रमाण हे ३२.६५ टक्के एवढे आहे. अनुसूचित जातीच्या लोकसंख्येच्या विचार केल्यास